26-07-12

जींद

कीटों को राखी बांध मनाएंगे रक्षाबंधन

सर्वेक्षण के बाद कीट बही-खाते की रिपोर्ट तैयार करवाती महिला। आज समाज

जींद। कीट चाहे शाकाहारी हो या मांसाहारी दोनों ही किस्म के कीटों ने कीट मित्र महिलाओं के साथ दोस्ती कर ली है। जैसे ही महिलाएं किसान पाठशाला में पहुंचती हैं, वैसे ही कीट महिलाओं के पास आकर बैठ जाते हैं।

महिला किसान पाठशाला की महिलाओं ने बताया कि वे रक्षाबंधन के पर्व पर कीटों को पौंची (राखी) बांधकर रक्षाबंधन का पर्व मनाएंगी। रक्षा बंधन पर भाई बहन से राखी बंधवाता है और बहन की रक्षा की सौगंध लेता है, लेकिन इस बार वे कीटों को राखी बांधकर उनकी रक्षा का संकल्प लेंगी। ताकि उनके बच्चों व उनके भाइयों की थाली जहर मुक्त हो सके।

उधर, पाठशाला का आरंभ खाप पंचायतों के संचालक कुलदीप ढांडा ने कैप्टन लक्ष्मी सहगल की मृत्यु पर दो मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर की। इसके बाद महिलाओं ने कपास के खेत में कीटों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण में पाया कि कोई भी कीट पूनम के कपास के इस खेत में अगले एक सप्ताह हानि पहुंचाने की स्थिति में नहीं है। सुमित्रा ने बताया कि कातिल बुगड़ा अपने बराबर व अपने से छोटे आकार के कीटों का खून पीकर अपनी वंशवृद्धि करता है। कातिल बुगड़ा शिकार को पकड़ते ही उसका कत्ल कर देता है। सुषमा ने बताया कि मटकु बुगड़ा कपास में पाए जाने वाले लाल बनिए का खून पीकर अपना गुजारा करता है। गीता ने कपास की फसल में फलेरी बुगड़े के बच्चे व प्रौढ़ देखा। शीला ने सर्वेक्षण के दौरान डायन मक्खी तथा सविता ने गोब की चितकबरी सुंडी के प्रौढ़ को पकड़ा।

र्क में बैठक के बाद किया प्रदर्शन, सौंपा ज्ञापन

अन्ना समर्थकों ने शुरू

25-07-12

गया। सेमिनार में नरवाना उपमंडल के 10 गांव से ...

चला कीट किसान का मुकदमा

किसान पाठशाला में खाप प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श करते किसान।

जींद। 'कीट नियंत्रणाय कीटाः हि:अस्त्रामोघा' अर्थात कीटों को नियंत्रित करने के लिए कीट ही अचूक अस्त्र है। यह बात कीट कमांडो किसान रणबीर मलिक ने मंगलवार को निडाना गांव के खेतों में आयोजित किसान पाठशाला में पहुंचे खाप प्रतिनिधियों के सामने कीटों की पैरवी करते हुए कही।

पिछले कई दशकों से किसानों व कीटों के बीच चले आ रहे झगड़े को निपटाने के लिए खाप पंचायत की अदालत में आए मुकदमे की सुनवाई के लिए खाप प्रतिनिधि किसान पाठशाला में पहुंचे थे। खाप पंचायत की तरफ से आए सफीदों बारहा प्रधान रणबीर देशवाल, किनाना बाराह के प्रधान दरिया सिंह सैनी, हाट बारहा के प्रधान दयारनंद बूरा व हटकेश्वर धाम कमेटी के प्रधान बलवान सिंह बूरा ने कीट कमांडो किसानों के साथ खेत में बैठकर कीटों व पौधों की भाषा सीखने के लिए प्रयास किए। पाठशाला में किसानों ने 6 ग्रुप बनाकर कीटों का सर्वेक्षण किया। खाप प्रतिनिधियों ने कीट सर्वेक्षण में पाया कि कपास के इस खेत में रस पीकर गुजारा करने वाली सफेद मक्खी, हरा तेला व चूरड़ा हानि पहुंचाने की स्थिति से काफी नीचे हैं। दर्जनभर गांवों से आए किसानों ने भी अपने-अपने खेतों से तैयार की कीट सर्वेक्षण रिपोर्ट को पंचायत के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसमें कीट हानि पहुंचाने की स्थिति से दूर नजर आए। खेत अवलोकन के दृश्य प्रस्तुत करते हुए किसान संदीप ने बताया कि उनके ग्रुप ने मकड़ी के सलेटी भूंड को खाते देख।

रोशन मुनिम ने बताया कि इनके ग्रुप ने क्राइसोपा के बच्चों को लेडी बिटल का गर्भ खाते देखा। लोहिया व जोगेंद्र ने बताया कि सर्वेक्षण के दौरान उन्हें मकोड़े को सलेटी भूंड का काम तमाम करते हुए देखा। इंटल कलां से आए किसान चतर सिंह ने कहा कि उनके ग्रुप ने डायन मक्खी, लोपा मक्खी, दीदड़ बुगड़ा के बच्चे, कातिल बुगड़ा, सिंगु बुगड़ा आदि मासाहारी कीडे देखे। चतर सिंह की बात को बीच में ही काटते हुए महाबीर व सुरेश ने कहा कि कपास की फसल में 6 किस्म की मांसाहारी मकड़ी उन्होंने देखी है। सर्वेक्षण के बाद जो रिपोर्ट सामने आई उसको देखते हुए अलेवा के किसान जोगेंद्र ने कहा कि कपास के इस खेत में तो मासाहारी कीटों के लिए दो दिन का भी भोजन नहीं है। अजीत ने बताया कि डायन मक्खी पौधे के पत्ते को मचाम के रुप में इस्तेमाल करती है और वहीं कीटों पर घात लगाती है।

नई नौ
नया क
जून
हर बुध
मात्र द
में प्रति
अब 6 जून के

प्रबंध संपादक-कार्तिक शर्मा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी-राकेश शर्मा, प्रधान संपादक-रवीन ढुकराल, सीनियर एसोशिएट एडिटर-संजीव शुक्ल* प्रकाशक एवं मुद्रक सुमित कुमार द्वारा मै. गुडमॉ
. श्री निवासपुरी नई दिल्ली 110065 से प्रकाशित RNI N

19-07-12

जींद
आज समाज
हिसार, गुरुवार, 19 जुलाई 2012
03

दूसरी फसल के कीटों ने भी दी महिला किसान पाठशाला में दस्तक

जींद। नजारा है ललीतखेड़ा गांव की महिला किसान पाठशाला का। पाठशाला की शुरुआत के साथ ही मास्टर ट्रेनर महिला किसान कविता ने महिलाओं को एक नई किस्म का कीट दिखाया, जिसका पेट भिरड़ जैसा था। इस कीट को निडाना व ललीतखेड़ा की महिलाओं ने खेतों में पहली बार देखा था। कीट को देखते ही नारो पूछ बैठती है आएं यू डांगरां की माच्छरदानी आला कीड़ा आड़ै खेतां में के कैरा सै। इसे-इसे कीड़े तो डांगरां की माच्छरदानी में घैने पाया करें सैं। कविता ने नारो की बात को बीच में ही काटते हुए महिलाओं को नए कीट के

बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह नए किस्म की लोपा मक्खी है जो खान-पान के आधार पर मांसाहारी होती है। इस मक्खी की तीन जोड़ी पैर व दो जोड़ी पंख होते हैं। अकसर किसान इसे हेलीकॉप्टर के नाम से पुकारते हैं। कविता ने बताया कि यह धान में लगने वाले तना छेदक, पत्ता लपेट के पतंगों का उड़ते हुए शिकार कर लेती है। सविता ने बताया कि लोपा मक्खी अपने अंडे धान के खेत में खड़े पानी में देती है। पानी में पैदा होने वाले इसके बच्चे भी मांसाहारी होते हैं। शीला ने बताया कि इसे जिंदा रहने के लिए खाने में अपने वजन से ज्यादा मांस चाहिए। नारो ने पूछा आएं फेर यू खेतां का कीड़ा है तो माच्छरदानी में कै करया कैरै सै। कृष्णा ने नारो के सवाल का जवाब देते हुए बताया यू कीड़ा उड़ै माच्छरां नै खाया करै सै।

इस बात पर बहस करने के बाद महिलाओं ने कीट बही खाता तैयार करने के लिए कपास के पौधों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के दौरान महिलाओं ने पाया कि कपास की फसल में पाने वाले शाकाहारी कीट सफेद मक्खी, हरा तेला, चूरड़ा, मिलीबग कोई भी फसल में हानि पहुंचाने की स्थिति में नहीं था। रही बात मांसाहारी कीटों की, कपास की फसल में कोई भी पौधा ऐसा नहीं था, जिस पर फलेरी बुगड़े के बच्चे (निम्प) मौजूद न हों। शीला ने बताया कि फलेरी बुगड़े के बच्चे शाकाहारी कीटों का खून पीकर गुजारा करते हैं। कीट सर्वेक्षण के आधार पर तैयार किए गए बही खाते से महिलाओं को कपास की फसल में किसी भी प्रकार के कीटनाशक के प्रयोग की जरुरत महसूस नहीं हुई। खाप पंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने कहा कि पृथ्वी पर साढ़े तीन करोड़ साल पहले पौधे विकसित हुए थे और पौधों पर गुजारा करने के लिए कीट आए थे।

किसान हरे नहीं पीले हाथ करने की चिंता करें : किसान पाठशाला की मास्टर ट्रेनर शीला ने कहा कि धान की फसल में लोपा मक्खी आने के बाद किसानों को धान में फूट के नाम पर डाली जाने वाली कीड़े मारने वाली हरी दवाई से हाथ हरे करने की जरूरत नहीं है। इसकी चिंता तो किसान लोपा मक्खी पर छोड़ अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के हाथ पीले करने की चिंता करें।

अन्य फसलों के कीटों ने भी महिलाओं से बनाई दोस्ती : कीटों के प्रति महिला किसानों के सकारात्मक रवैये को देखकर दूसरी फसलों के कीटों ने भी महिलाओं से दोस्ती बना ली है। बुधवार को ललीतखेड़ा में आयोजित महिला किसान पाठशाला में कीट सर्वेक्षण के दौरान लालड़ी व अखटिया बग भी महिलाओं के बीच आ गए। कविता ने बताया कि लालड़ी कीट अकसर घीया, तोरी, कचरी की बेलों पर पाया जाता है। यह कीट बेल के पत्ते खाकर अपना गुजारा करता है। अखटिया बग औषधीय आख के पौधे पर पाया जाता है। यह कीट भी रस चूसकर अपना जीवन चक्र चलाता है।

6 करोड 31 लाख

18-07-12

04 आज समाज
हिसार, बुधवार, 18 जुलाई 2012
जींद

चौधरियों ने लगाई 'किसान-कीट' पर पाठशाला, किया अध्ययन

नरेंद्र कुंडू

जींद। देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। लेकिन आज चंद स्वार्थी लोगों ने मुनाफे की चाह में उनके इस नारे की चमक फीकी पड़ रही है। हम भगवान विष्णु को देश का पालनहार मानते हैं, लेकिन वास्तव में पालनहार का फर्ज तो किसान अदा करता है जो अपने पसीने से धरती को सींचता है और धरती का सीना चीर कर अन्न पैदा करता है। लेकिन बढ़ते रासायनिकों के प्रयोग से खेती किसानों के लिए घाटे का सौदा बन रही है और देश का पालनहार अपना ही पालन-पोषण ढंग से नहीं कर पा रहा है। यह बात देशवाल खाप के प्रतिनिधि रामचंद्र देशवाल ने मंगलवार को किसान खेत [illegible] खाप पंचायत की तरफ से आए खाप प्रतिनिधियों ने कीट मित्र किसानों के साथ बैठकर कीटों व किसानों के इस मुकदमे का गहन अध्ययन किया। उनके साथ नंदगढ़ बारहा के प्रधान होशियार सिंह दलाल भी मौजूद थे। पाठशाला के संचालक डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि कीटों को मारने की जरूरत नहीं है जरूरत है तो कीटों को पहचानने की, कीटों को समझने की व उन्हें परखने की। किसानों को कीटों की पहचान होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि खेत में पाई जाने वाली लेडी बिटल को स्कूली बच्चे फेल-पास के नाम से जानते हैं।

डा. दलाल ने कहा कि अगर चूरड़ा रस चूस कर फसल को नुकसान पहुंचाता है तो माइटल कीट को खाकर फसल को नुकसान होने से बचाता भी है। उन्होंने बताया कि देश में 221 किस्म की पेस्टीसाइड कंपनियां रजिस्टर्ड हैं और इनमें से 53 पेस्टीसाइडों को कैंसर की जननी घोषित किया जा चुका

खेत पाठशाला में मौजूद किसान। आज समाज

है। किसान मनबीर रेढू ने बताया कि कातिल बुगड़ा पहले कीट का कत्ल करता है उसके बाद उसका खून चूसता है। दीदड़ बुगड़ा मात्र 30 सेकेंड में मिलीबग का काम तमाम कर देता है। सिंगु बुगड़े के दोनों कंधों पर सिंग होते हैं और यह भी कीट का खून चूसकर गुजारा करता है। बिंदु बुगड़े के कंधों पर बिंदु होते हैं और यह रक्त चूसकर अपनी वंशवृद्धि करता है। ईगराह, अलेवा, खरकरामजी, ललीतखेड़ा, निडाना, इंटलकलां व निडानी से आए किसानों ने मांसाहारी व शाकाहारी कीटों का अलग-अलग बही खाता तैयार किया। बरहा कलां बाराह के प्रधान कुलदीप ढांडा ने बताया कि कीटों की हड्डियां बाहर व मांस अंदर होता है। कीटों में रक्त का संचार इंसान की तरह नलियों में नहीं खुले में होता है और कीट का खून हवा के संपर्क में आने के बाद भी नहीं जमता। अंडे से पर्याप्त भोजन न मिलने के कारण कीट का बच्चा विकसित होने के लिए बाहर आता है। पाठशाला में हस्तम [illegible] हिंद पहलवान दारा सिंह व किसान सुनील के [illegible] के निधन पर दो मिनट का मौन धारण कर शोक प्रकट किया। इस अवसर पर गांव मैणी सुरजन (महम) से भी कुछ किसान कीट ज्ञान प्राप्त करने के लिए पाठशाला में पहुंचे।

नया प्रयोग किया शुरू: डा. सुरेंद्र दलाल ने बताया कि कपास की फसल में बोकी से फूल बनने में 28 दिन का समय लगता है। पौधे पर क्षमता से ज्यादा बोकी आ [illegible] तो पौधा कुछ बोकियों को गिरा देता है। अगर शाकाहारी [illegible] बोकियों को खा लेता है तो पैदावार पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा। इस बात को पुख्ता करने के लिए तीन पौधों को प्रयोग के लिए चुना गया। इन पौधों पर नौ व दस बोकियां मिलीं। जिनमें से प्रत्येक पौधे से दो या तीन बोकियां खाप प्रतिनिधियों ने अपने हाथों से तोड़कर गिरा दीं।

12-07-12

ललीतखेड़ा व निडाना गांव में लगती है कीटों पर पाठशाला

कीटों की तरफ दोस्ती का हाथ

जींद। फसल में जिन कीटों को देखकर किसान अकसर डर जाते हैं और दुश्मन समझकर खात्मे के लिए स्प्रे टंकियां उठा लेते हैं, उन्हीं कीटों को ललीतखेड़ा व निडाना गांव की महिलाएं किसान का सबसे बड़ा दोस्त बताती हैं। महिलाओं ने कीटों की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया है। कीटों ने भी भावनाओं को समझते हुए पहचान बना ली है। इसलिए महिलाओं के खेत में पहुंचते ही कीट इनके पास बैठ जाते हैं। ललीतखेड़ा में लगने वाली महिला किसान पाठशाला में अकसर इस तरह के नजारे देखने को मिल जाते हैं।

बुधवार को आयोजित महिला किसान पाठशाला में इसी तरह का एक वाक्या सामने आया, जब एक मांसाहारी दीदड़ बुगड़ा शांति नामक एक महिला के चेहरे पर आकर बैठ गया। पाठशाला में मौजूद अन्य सभी महिलाएं लेंस की सहायता से देखने में मशगूल रहीं। अंग्रेजो ने महिलाओं को दीदड़ बुगड़ा दिखाते हुए बताया कि इसके बच्चे खून चूसक होते हैं। पिंकी ने सवाल उठाया कि यह किसका खून चूसते हैं। मनीषा ने जवाब देते हुए कहा कि कपास की फसल में सफेद मक्खी, हरा तेला व चूराड़े ही मौजूद हैं। इसलिए दीदड़ बुगड़ा इन्ही कीटों का खून चूसते हैं।

कीटों की संख्या दर्ज करतीं महिलाएं। आज समाज

शीला ने सलेटी भूंड दिखाते हुए बताया कि आज के दिन कपास में सलेटी भूंड की तादाद प्रति पौधा एक की है और यह शाकाहारी है तथा पत्तों को खाकर अपना गुजारा करता है। शीला ने महिलाओं को प्रजनन क्रियाएं करते हुए हफलो नामक लेड़ी बिटल दिखाते हुए कहा कि इसके बच्चे व प्रौढ़ दोनों मांसाहारी होते हैं।

रणबीर मलिक ने बताया कि कपास की फसल में 2 से 28 प्रतिशत तक पर परागन होता है और यह केवल कीटों से ही संभव है। अगर किसान फसल में मौजूद कीटों के साथ छेड़खानी न करें तो पर परागन के कारण 2 से 28 प्रतिशत तक फूल से टिंडे ज्यादा बनने की संभावना होती है। रेढ़ू ने महिलाओं द्वारा खेत का सर्वेक्षण कर प्रस्तुत की गई रिपोर्ट से तैयार किए बही-खाते से हिसाब लगाकर बताया कि फिलहाल कपास की फसल में कोई भी शाकाहारी कीट हानि पहुंचाने की स्थिति में नहीं है। रेढ़ू की इस बात पर पाठशाला में मौजूद कृषि अधिकारियों, खाप पंचायत के संचालक कुलदीप ढांडा व सभी महिलाओं ने सहमती जताई। इस दौरान सहायक पौध संरक्षण अधिकारी अनिल नरवाल व खंड कृषि अधिकारी जेपी कौशिक भी मौजूद थे।

11-07-12

रजिस्ट्री थमा दी। कुछ समय बाद पुलिस ने अबतक कार्रवाई नहीं की। 14 जुलाई को लगाई जाएगी।

कीटों की पढ़ाई कर रहे खाप पंचायत प्रतिनिधि

नरेंद्र कुंडू

जींद। इतिहास गवाह है जब भी लड़ाई हुई है सिवाए विनाश के कुछ हाथ नहीं लगा है। इसलिए तो कहा जाता है कि लड़ाई का मुंह हमेशा काला ही होता है। अगर समय रहते किसानों व कीटों के बीच दशकों से चली आ रही इस लड़ाई को खत्म नहीं किया गया तो इसके परिणाम और भी गंभीर होंगे। इस झगड़े को निपटाने का बीड़ा जो खाप पंचायतों ने उठाया है वह अपने आप में एक अनोखी पहल है, लेकिन यह एक बड़ा ही पेचीदा मसला है। इसलिए खाप पंचायत प्रतिनिधियों को इस विवाद को सुलझाने के लिए अपना फैसला देने से पहले इस विवाद की गहराई तक जाने तथा कीटों की भाषा सीखने की जरूरत पड़ेगी, ताकि पंचायत इस मसले पर निष्पक्ष फैसला सुना सके।

यह सुझाव कीट कमांडो किसान मनबीर रेढ़ू ने मंगलवार को निडाना गांव में खाप पंचायत में पहुंचे विभिन्न खाप पंचायत प्रतिनिधियों के सामने रखा। खाप पंचायत की तीसरी बैठक में अखिल भारतीय जाट महासभा व मान खाप के प्रधान ओमप्रकाश मान, पूनिया खाप के प्रतिनिधि दलीप सिंह पूनिया, सांगवान खाप से कटार सिंह सांगवान, जाटू खाप चौरासी से राजेश घनघस तथा सतरोल खाप प्रतिनिधि धूप सिंह खर्ब विशेष तौर पर मौजूद थे। पंचायत में पहुंचे खाप प्रतिनिधियों ने कीटों की भाषा सीखने के लिए नरमा के खेत में बैठकर कीट मित्र किसानों के साथ गहन मंथन किया। पाठशाला के संचालक डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि आज लोगों में खून की कमी के जो मामले सामने आ रहे हैं उसका मुख्य कारण हमारा खान-पान का जहरीला होना है। डा. दलाल ने कहा कि किसान कीटों को मारने के लिए जब कीटनाशकों का स्प्रे करता है तो उसका सिर्फ एक प्रतिशत हिस्सा ही कीटों पर पड़ता है, बाकी 99 प्रतिशत हिस्सा हवा, पानी व जमीन में घूल जाता है। कीटों के पत्ते खाने या रस चूसने से फसल के उत्पादन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। डा. दलाल ने मांसाहारी मक्खियों के बारे में बताया कि दैत्य मक्खी उड़ते हुए कीटों को खाती है और अपने वजन से ज्यादा मास खाने वाली यह दुनिया की एकमात्र मक्खी है। किसान इसे हैलीकॉप्टर के नाम से जानते हैं। डा. कमल सैनी ने कहा कि इन 20 वर्षों में कीटों के प्रयोग का तेजी से बढ़ा है। अकेले हिंदुस्तान में लगभग 40 हजार करोड़ के कीट रसायनों, लगभग 50 हजार करोड़ के खरपतवार नाशकों तथा लगभग 30 हजार करोड़ बीमारी, फफुंद व जीवाणु नाशक रसायनों का कारोबार होता है। इस कारोबार से होने वाली आमदनी का 80 से 90 प्रतिशत हिस्सा विदेशों में जा रहा है। सैनी ने राजपुरा भैण ने कहा कि गांव के अड्डे पर कीटनाशकों की चार दुकानें हैं, जिनका एक वर्ष का चार करोड़ का कारोबार है और इसमें से अकेले तीन करोड़ के कीटनाशक भैण के किसान खरीदते हैं।

जाट महासभा प्रधान को स्मृति चिह्न भेंट करते किसान। आज समाज

पौधों के पत्ते काटते खाप प्रतिनिधि। आज समाज

सवाल का निकाला तोड़

रणबीर मलिक ने गत सप्ताह पंचायत के सामने अपना सवाल रखा था कि पौधे रंग-बिरंगे फूलों से श्रृंगार क्यों करते हैं। इन्हें श्रृंगार की क्या आवश्यकता है। इस मंगलवार को हुई पंचायत में किसानों ने रणबीर मलिक के सवाल का जवाब देते हुए बताया कि पौधे कीटों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए रंग-बिरंगे फूलों का श्रृंगार करते हैं। अगर कीट फूल के पत्तों को खा लेते हैं तो उससे पैदावार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि पत्तों का काम तो केवल कीटों को आकर्षित करना है। कीट फसल में परागन की भूमिका निभाते हैं। इसलिए पौधे कीटों को आकर्षित करने के लिए फूलों का श्रृंगार करते हैं। आज 25 प्रतिशत लोगों की मौत का कारण कैंसर है और कैंसर का कारण पेस्टीसाइड का बढ़ता प्रयोग है। खाप पंचायत के सामने निडाना के कीट मित्र किसानों ने इस विवाद को निपटाने की गुहार लगाई है। इसलिए पंचायत के प्रतिनिधि बारी-बारी किसान खेत पाठशाला में पहुंचकर इनकी भाषा सीख रहे हैं। अगली बार वे भिवानी से 84 श्योराण खाप व तोशाम से फौगाट खाप सहित 6 खापों के प्रतिनिधियों को यहां लेकर आएंगे।
ओमप्रकाश मान, प्रधान अखिल भारतीय जाट महासभा

कैंसर के मरीजों पर हुई चर्चा

पाठशाला में पहुंचे किसानों ने बढ़ते कैंसर के मरीजों की संख्या पर चर्चा की। चाबरी निवासी सुरेश ने कहा कि उनके गांव में 8 लोग कैंसर के कारण काल का ग्रास बन चुके हैं। ललीतखेड़ा निवासी रामदेवा ने बताया उनके गांव में कैंसर के कारण एक परिवार की दो पीढ़ियां खत्म हो चुकी हैं। लाडवा (हिसार) से आए एक किसान ने बताया कि उनके गांव में कैंसर के कारण 25, अलेवा निवासी जोगेंद्र ने बताया कि उनके गांव में 10 लोग, निडानी में 9, ईगराह में 11 तथा सिवाहा निवासी एक किसान ने बताया कि उनके गांव में कैंसर के कारण 7 लोग मौत के मुंह में समा चुके हैं।

21-06-12

कीटों की पाठशाला

किसान पाठशाला के दौरान कपास की फसल में कीटों की पहचान करते किसान।

देश की आर्थिक रीढ़ को मजबूत करने के लिए यहां दी जाती है कीटों की तालीम

नरेंद्र कुंडू

जींद। जींद जिले के निडाना गांव में चल रहे कीट साक्षरता केंद्र में पेड़ पर लकड़ी का बोर्ड लगाया जाता है इस पाठशाला के कीट कमांडों किसानों का मुख्य उद्देश्य कीटनाशकों के प्रयोग को कमकर मनुष्य की थाली को जहर मुक्त करना है।

अपने आप में किसानों द्वारा शुरू की गई अनोखी पहल है। कृषि अधिकारी भी इन्हें अपना रोल मॉडल मानकर यहां प्रशिक्षण लेने की इच्छा जाहिर कर चुके हैं।

ग्रुप बनाकर करते हैं तैयारी: केंद्र पर किसान चार-चार किसानों के अलग-अलग ग्रुप बनाते हैं और फिर खेत को अलग-अलग भागों में बांट दिया जाता है। किसान ग्रुप अनुसार फसल में घुसकर लेंसों की सहायता से पौधों के पत्तों पर मौजूद कीटों की पहचान कर उसके जीवन चक्र के बारे में जानकारी जुटाते हैं। उनकी तादाद का पूरा लेखा-जोखा कागज पर तैयार करते हैं। कीट प्रबंधन के बारे में बात की जाए तो कृषि विज्ञानिकों के पास भी इनके सवालों का तोड़ नहीं है।

मनोरंजन का भी रखते हैं खयाल: किसान पाठशाला के दौरान खूब मेहनत करते हैं, लेकिन साथ-साथ खाने-पीने व मनोरंजन का पूरा ध्यान रखते हैं। सप्ताह के हर मंगलवार को लगने वाली इस पाठशाला में वे हर बार दूसरे किसान को खाने-पीने के सामान की व्यवस्था की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। वह किसान अपने घर से सभी किसानों के लिए हलवा, दलिया या अन्य प्रकार का व्यंजन तैयार करवाकर लाता है। उब ना जाएं इससे बचने के लिए बीच-बीच में चुटकले के माध्यम से मनोरंज करते हैं।

हाईटेक हैं किसान: इस केंद्र के किसान पूरी तरह से हाईटेक हो चुके हैं। खेत से हासिल किए गए अपने अनुभवों को ये ब्लॉग या फेसबुक के माध्यम से अन्य लोगों के साथ साझा करते हैं। अपना खेत अपनी पाठशाला, कीट साक्षरता केंद्र, महिला खेत पाठशाला, चौपटा चौपाल, निडाना गांव का गौरा, कृषि चौपाल, प्रभात कीट पाठशाला सहित एक दर्जन के लगभग ब्लॉग बनाए हुए हैं और इन पर ये किसान पूरी ठेठ हरियाणवी भाषा में अपने विचार प्रकट करते हैं।

Bhai Surender Kumar Memorial

26-06-12

18 सप्ताह तक चलेगा अध्ययन और 19वें सप्ताह में पंचायत सुनाएगी फैसला

खाप दिलाएंगी पेस्टीसाइड से निजात

नरेंद्र कुंडू

जींद। फतवे जारी करने के लिए बदनाम प्रदेश की सर्व खाप पंचायतें अब पेस्टीसाइड के खिलाफ मोर्चा खोलने जा रही है। पिछले 40-45 वर्षों से कीटों व किसानों के बीच चल रहे झगड़े को निपटाने के लिए सर्व खाप पंचायत द्वारा अनोखी पहल की गई है। कीटों व किसानों की इस आपसी लड़ाई से धरती पर मौजूद अन्य जीवों को हो रहे नुकसान को रोकने के लिए खाप पंचायतों ने हस्तक्षेप किया है। खाप पंचायत का प्रतिनिधिमंडल सप्ताह के हर मंगलवार को निडाना के कीट साक्षरता केंद्र पर पहुंचकर दोनों पक्षों की बहस सुनेगा। यह सिलसिला लगातार 18 सप्ताह तक चलेगा और 19वें सप्ताह में प्रदेश के सर्व खाप पंचायत के प्रतिनिधि एकत्रित होकर अपना फैसला सुनाएंगे।

फतवे जारी करने के लिए जानी जाने वाली प्रदेश की सर्व खाप पंचायतों ने पुरानी से पुरानी रंजीश पर समझौते की मोहर लगाकर आपसी भाईचारे को कायम रखने का काम किया है। आपसी भाईचारे को कायम रखने वाली ये खाप पंचायतें अब एक अनोखी मुहिम का हिस्सा बनने जा रही हैं। इस मुहिम के तहत खाप पंचायतें धरती पर मौजूद जीवों की जिंदगी को बचाने की भूमिका में नजर आएंगी। इसके लिए कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों ने सर्व खाप पंचायतों को चिट्ठी डालकर कीटों व किसानों के बीच चली आ रही कीट मित्र किसानों की मांग को देखते हुए खर्व खाप के प्रतिनिधियों ने जीवरक्षक इस मुहिम में अपना योगदान देने के निर्णय पर मोहर लगा दी है।

पहली बैठक में खाप पंचायतों की ओर से ये प्रतिनिधि लेंगे भाग: कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों द्वारा सर्व खाप पंचायतों को चिट्ठी डालने के बाद खाप पंचायतों के प्रतिनिधियों ने उनकी मांग पर सहमती जताई है। मंगलवार से शुरू होने वाली इस बैठक में नैन खाप के मुखिया नफे सिंह नैन, कंडेला खाप के प्रधान टेकराम कंडेला, बराह कलां बाहरा के प्रधान कुलदीप सिंह ढांडा, दाहड़न खाप से देवा सिंह, नरवाना खाप से अमृतलाल चोपड़ा, नौगामा खाप से कुलदीप सिंह रामराये तथा सर्व खाप पंचायत की महिला विंग की प्रधान प्रो. संतोष दहिया सर्व खाप पंचायत की पहली बैठक में प्रतिनिधित्व करेंगी।

जैविक खेती को मिलेगा बल

निडाना गांव स्थित कीट साक्षरता केंद्र के किसान मनुष्य की थाली को जहर मुक्त करने के लिए पिछले कई वर्षों से कीटनाशक रहित खेती को बढ़ावा देने के लिए मुहिम शुरू किए हुए हैं। इस मुहिम को धरातल पर उतारने के लिए कीट मित्र किसानों ने फसल में मौजूद शाकाहारी व मासाहारी कीटों को अपना हथियार बनाया है। ये कीट मित्र किसान अन्य किसानों को भी फसल में मौजूद कीटों की पहचान करने तथा उनके जीवनचक्र को समझने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। सर्व खाप पंचायतों द्वारा इस मुहिम में शामिल होने के बाद उनकी इस मुहिम को बल मिलेगा और किसानों में जैविक खेती के प्रति रुझान बढ़ेगा।

किसान अधिक से अधिक उत्पादन लेने की होड़ में अंधाधूंध कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। जो फसल में मौजूद शाकाहारी व मासाहारी कीटों तथा मनुष्य के लिए नुकसादायक है। पिछले कई वर्षों से किसानों में कीटनाशकों के प्रयोग को लेकर संशय बरकरार है। जिस कारण किसान जानकारी के अभाव में कंपनियों के बहकावे में आकर लुट रहे हैं। इस संशय को दूर करने तथा किसानों का उचित मार्गदर्शन करने के लिए कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों के अनुरोध पर इस मुहिम की शुरुआत की गई है। प्रदेश की सर्व खाप पंचायत के इतिहास में यह एक अनोखी पहल है।

कुलदीप सिंह ढांडा संयोजक समन्वय कमेटी, सर्वजातिय सर्व खाप महापंचायत, हरियाणा

27-06-12 H

नई पहल | कीट साक्षरता केंद्र के किसानों ने बैठक में पहुंचे खाप प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न देकर किया स्वागत

कीट प्रबंधन के लिए आगे आई सर्व खाप पंचायत

नरेंद्र कुंडू

जींद। आपने खाप पंचायतों को सामाजिक तानेबाने को बनाए रखने के लिए झगड़े निपटाते देखा होगा। अब खाप पंचायतें पिछले 40-45 वर्षों से कीटों व किसानों के बीच चले आ रहे झगड़े को निपटाने में सहयोग करेंगी। निडाना गांव स्थित कीट साक्षरता केंद्र के कीट मित्र किसानों के आह्वान पर मंगलवार को निडाना गांव के जोगेंद्र मलिक के खेत पर एक पंचायत का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता दाड़न खाप के प्रधान देवा सिंह ने की तथा संचालन बराह कलां बाहरा के प्रधान कुलदीप सिंह ढांडा ने किया। पंचायत में निर्णय लिया गया कि कीटों व किसानों के इस झगड़े को निपटाने के लिए सप्ताह के हर मंगलवार को सर्व खाप पंचायत की ओर से एक पंचायत का आयोजन किया जाएगा। 19वीं बैठक में सर्वजातीय सर्व खाप महापंचायत बुलाकर फैसला सुनाएंगे। कीट साक्षरता केंद्र के किसानों ने बैठक में पहुंचे खाप प्रतिनिधियों का हथजोड़े (प्रेइंगमेंटीस) कीट का स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया।

सर्वजातीय सर्व खाप महापंचायत द्वारा आयोजित पंचायत में कीटों की तरफ से पक्ष रखते हुए किसान रणबीर मलिक ने कहा कि आज किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशकों का अंधाधूंध प्रयोग से दूध, पानी, सब्जी व अन्य खाद्य पदार्थों सहित सब कुछ जहरीला होता जा रहा है। मलिक ने कहा कि किसान ज्ञान के अभाव के कारण फसल में मौजूद कीटों को ही अपना दुश्मन समझते हैं, जबकि वास्तविकता इसके विपरित है। फसल में शाकाहारी व मासाहारी दो प्रकार के कीट होते हैं।

पंचायत प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न भेंट करते कीट साक्षरता केंद्र के किसान।

मलिक ने कहा कि 2001 में जब बीटी कपास में अमेरिकन सुंडी आई तो कोई भी कीटनाशक उस पर काबू नहीं पा सका। खुद कृषि वैज्ञानिक यह मानते हैं कि कीटनाशकों के प्रयोग से सिर्फ सात प्रतिशत ही रिकवरी होती है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए सोध से यह साबित हो चुका है कि कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से हमारा खानपान तो जहरीला हुआ ही है साथ-साथ फसलों में 95 प्रतिशत नुकसान भी बढ़ा है। मलिक ने कहा कि वे खुद पिछले सात साल से देसी कपास की खेती कर रहे हैं और इन सात सालों के दौरान उन्होंने एक बार भी अपनी फसल में कीटनाशक का प्रयोग नहीं किया है। इगराह से आए मनबीर रेढू ने कहा कि वह पिछले 5 वर्षों से कीटनाशक रहित खेती कर रहे हैं और उसे हर बार अच्छा उत्पादन मिल रहा है। कीट साक्षरता केंद्र के संचालक डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों के रिकॉर्ड के अनुसार 14 लाख किस्म के कीट हैं। जिनमें तीन लाख 8 हजार शाकाहारी व साढ़े चार लाख किस्म के मासाहारी कीट हैं। इन कीटों के पालन के लिए तीन लाख 65 हजार किस्म के पौधे धरती पर मौजूद हैं।

कीट का बही खाता हो रहा है तैयार

कीटों व किसानों के इस झगड़े में पंचायत सही न्याय कर सके इसके लिए कीट साक्षारता केंद्र के किसानों द्वारा पूरी योजना तैयार की गई है। पंचायत के समक्ष कीटों के पक्ष में सभी साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए किसानों के 5 ग्रुप बनाए गए है। कीट प्रबंधन के मास्टर ट्रेनर को प्रत्येक ग्रुप का लीडर बनाया गया है। प्रत्येक ग्रुप 10-10 पौधों की गिनती करता है और एक पौधे पर मौजूद सभी पत्तों व उन पर मौजूद कीटों की पहचान कर उनका आंकड़ा तैयार करता है। सभी ग्रुपों द्वारा गिनती की जाने के बाद उनका अनुपात निकालकर कीट बही-खाते में दर्ज किया जाता है। मंगलवार को तैयार की गई रिपोर्ट में किसानों ने कपास की फसल में मौजूद रस चुसने वाली सफेद मक्खी 1.3 अनुपात, हरा तेला 0.5 व चूरडा 1.64 अनुपात तथा, शाकाहारी कीटों में डाकू बुगड़ा 0.5 और मकड़ी 0.40 के अनुपात में मौजूद है। डा. दलाल ने कहा कि अभी ये कीट फसल को नुकसान पहुंचाने की स्थित में नहीं हैं।

27-06-12

आज समाज

वर्ष-6, अंक-177, हिसार, पृष्ठ-4, बुधवार, 27 जून 2012, शक संवत 1934, आषाढ़ शुक्ल पक्ष 8, आषाढ़ मास की 14 प्रविष्टे, 6 शावान हिजरी 1433, अष्टमी, मूल्य 1/-

02 नशा मुक्ति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

जींद

आशा वर्करों को जच्चा-बच्चा देखभाल की दी जानकारी 03

पेस्टीसाइड पर गहन मंथन में जुटी खाप महापंचायत

■ 18 बैठकों में गहन मंथन के बाद महापंचायत लेगी ऐतिहासिक फैसला

नरेंद्र कुंडू

जींद। कीटों व किसानों के झगड़े का निपटारा करने के लिए सर्वजातीय सर्व खाप महापंचायत द्वारा शुरू की गई मुहिम पूरे देश की पंचायतों के लिए एक मिशाल कायम करेगी। अपने-आप में यह एक अनोखी मुहिम है।

कीटों व किसानों के बीच में दशकों से चली आ रही लड़ाई कोई आम लड़ाई नहीं है। अगर समय रहते इसे रोका नहीं गया तो हमारी आने वाली पुश्तों को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। मंगलवार को निडाना में हुई पंचायत में पंचायत के प्रतिनिधि भी इस बात को स्वीकार कर चुके हैं। यह पंचायत अपने आप में एक अनोखी पंचायत थी। पंचायत प्रतिनिधियों ने खेत में कीटों का व्यवहारिक ज्ञान लेकर खेत की डोल पर बैठकर हुक्के की गुड़गुड़ाहट के साथ कीटनाशक रहित खेती के मुद्दे पर गहन मंथन किया। लगातार चार घंटे चली इस पंचायत में किसानों व पंचायत प्रतिनिधियों ने खुलकर बहस की। सर्व जातीय सर्व खाप महापंचायत की महिला विंग की प्रधान प्रो. संतोष दहिया ने कहा कि वे पिछले 5 सालों से कन्या भ्रूणहत्या रोकने के कार्य में जुटी हुई हैं और मुद्दे पर 35 हजार से ज्यादा लोगों से हस्ताक्षर करवा चुकी हैं। इस मुहिम के दौरान जब वे जनता के बीच जाती हैं तो वहां भी किसानों के शरीर पर कीटनाशकों के दूष्प्रभाव स्पष्ट नजर आते हैं। कीटनाशक के छिड़काव के दौरान सैकड़ों किसान काल का ग्रास बन जाते हैं तो किसी किसी के अंग ही खराब हो जाते हैं। बराह कलां व बारह खाप के प्रधान कुलदीप ढांडा ने कहा कि कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग से जीव जगत नष्ट हो रहा है। कीटनाशकों से हम शारीरिक ही नहीं मानसिक रोगों की चपेट में भी आ रहे हैं। कीटनाशकों के प्रयोग से कैंसर, खून की कमी, डिप्रेशन, हार्ट अटैक आदि खतरनाक बीमारियां हमें जकड़ती जा रही हैं, जो हमारे लिए एक चिंता का विषय है। नरवाना खाप के प्रतिनिधि अमृत लाल अरोड़ा ने कहा कि जिस तरह एक नशेड़ी व्यक्ति नशे का आदि हो जाता है, ठीक उसी तरह जमीन व किसान भी कीटनाशकों का आदि हो चुका है।

पंचायत में विचार-विमर्श करते खाप पंचायत प्रतिनिधि।

अगर कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग पर जल्द से जल्द अंकुश नहीं लगाया गया तो हमारा वंश बिल्कुल ही नष्ट हो जाएगा। दाड़न खाप उचाना के प्रधान देवा सिंह, कुंडू खाप के प्रधान महाबीर सिंह कुंडू, कंडेला खाप के प्रधान टेकराम कंडेला, चहल खाप के संरक्षक दलीप सिंह चहल ने कहा कि यह मुद्दा पंचायतों के लिए चर्चा विषय है। इस पर प्रदेश ही नहीं पूरे देश की पंचायतों को ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कीटनाशक निर्माता कंपनियां झूठे व भ्रामक विज्ञापनों के माध्यम से किसानों को लूट रही हैं। उन्होंने कहा कि कीटनाशकों के दूष्प्रभाव को देखते हुए कई प्रदेशों में तो खुद सरकार ने ही कीटनाशकों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। डा. सुरेंद्र दलाल ने कहा कि हमें कीटों को मारने की जरूरत नहीं है। जरूरत है तो सिर्फ कीटों की पहचान करने व इनके जीवन चक्र के बारे में जानने की। डा. दलाल ने कहा कि कीट मित्र किसान फसल में मौजूद 109 कीटों की पहचान कर चुके हैं, जिनमें 82 कीट मासाहारी व 27 किस्म के कीट शाकाहारी होते हैं। उन्होंने कहा कि अब यह लड़ाई सर्व खाप महापंचायत के दरबार में पहुंच चुकी है। महापंचायत लगातार 18 पंचायतों में इस मुद्दे पर गहन मंथन कर 19 वीं महापंचायत में अपना फैसला सुनाएगी।

28-06-12

अब निडाना में भी जहरमुक्त खेती

कपास के पौधों पर मौजूद कीटों की पहचान करती महिलाएं। -आज समाज

ऑर्गेनिक खेती के लिए पुरुषों के साथ कंधा मिलाकर चल रही महिलाएं

नरेंद्र कुंडू

जींद। निडाना गांव के गौरे से पेस्टीसाइड के विरोध में उठी इस आंधी को रफ्तार देने में निडाना गांव की गौरियां भी पुरुषों के बराबर अपनी भागीदारी दर्ज करवा रही हैं। निडाना गांव की महिलाएं ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने के लिए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। कीट मित्र किसानों ने जहां इस मुहिम को सफल बनाने के लिए खाप पंचायतों का दामन थाम है, वहीं गांव की महिलाओं ने भी इस मुहिम पर रंग चढ़ाने के लिए आसपास के गांवों की महिलाओं को जागरुक करने का बीड़ा उठाया है। अक्षर ज्ञान के अभाव का रोड़ा भी इन महिलाओं की रफ्तार को कम नहीं कर पा रहा है। पुरुषों के साथ ही इन महिलाओं ने भी इस लड़ाई में शंखनाद कर दिया है। महिलाएं घंटों कड़ी धूप के बीच खेतों में बैठकर लैंस की सहायता से कीटों की पहचान में जुटी रहती हैं। बुधवार को भी महिलाओं ने ललितखेड़ा गांव में पूनम मलिक के खेत में महिला खेत पाठशाला का आयोजन किया। इस दौरान निडाना गांव की मास्टर ट्रेनर महिलाओं ने ललितखेड़ा गांव की महिलाओं को कीटों का व्यवहारिक ज्ञान दिया। मास्टर ट्रेनर अंग्रेजो देवी, गीता मलिक ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि फसल में मांसाहारी व शाकाहारी दो प्रकार के कीट होते हैं। शाकाहारी कीट फसल के पत्तों से रस चूसकर या फसल के पत्तों को खाकर अपना जीवन चक्र चलाते हैं। मांसाहारी कीट शाकाहारी कीटों को अपना भोजन बनाते हैं और अपना जीवन यापन करते हैं। मांसाहारी व शाकाहारी कीटों की इस जीवन चक्र की प्रक्रिया में किसानों को अपने आप ही लाभ पहुंचता है।

कमलेश, मीना मलिक, सुदेश मलिक ने कहा कि अगर किसान फसल में मौजूद मांसाहारी व शाकाहारी कीटों की पहचान कर उनके जीवन चक्र के बारे में ज्ञान अर्जित कर ले तो किसान को कभी भी फसल में पेस्टीसाइड के इस्तेमाल की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। खेत पाठशाला के दौरान मास्टर ट्रेनर महिलाओं ने लैंस की सहायता से अन्य महिलाओं को भी कीटों की पहचान करवाई। इस दौरान महिलाओं ने फसल में शाकाहारी कीटों में सफेद मक्खी, हरा तेला, बुगड़ा तथा मासाहारी कीटों में क्राइसोपा के बच्चे, मकड़ी पदोकड़ी बिटल व दो किस्म के हथजोड़े देखे। महिलाओं को ट्रेंड करने के लिए महिलाओं के 5 ग्रुप तैयार किए गए। प्रत्येक ग्रुप में चार अनट्रेंड व एक मास्टर ट्रेनर महिलाओं को शामिल किया गया। इस अवसर पर महिलाओं ने मासाहारी व शाकाहारी कीटों पर तैयार किए गए गीत सुनाकर सबका मन मोह लिया। महिला खेत पाठशाला में मौजूद बराह कलां बारहा खाप के प्रधान कुलदीप ढाडा ने महिलाओं के गीतों पर खुश होकर सभी महिलाओं को 100-100 रुपए पुरस्कार राशि दी। महिलाओं ने लगातार साढ़े चार घंटे कीटों पर गहन मंथन किया।

बही-खाता किया जा रहा तैयार

कीट प्रबंधन की मास्टर ट्रेनर महिलाओं द्वारा कीटनाशक रहित खेती की इस मुहिम को सफल बनाने तथा कीटों का पूरा रिकार्ड तैयार करने के लिए एक बही-खाता तैयार किया जा रहा है। बही-खाते में पूरी जानकारी दर्ज करने के लिए सभी महिलाओं को अगले सप्ताह महिला खेत पाठशाला में आने से पहले अपने-अपने खेतों का पूरा निरीक्षण करने तथा कपास की फसल में मौजूद मांसाहारी व शाकाहारी कीटों का पूरा रिकॉर्ड तैयार करने के लिए प्रेरित किया गया, ताकि फ़सल में आने वाले मासाहारी व शाकाहारी कीटों का पूरा डाटा तैयार किया जा सके।

निडाना के कीट साक्षरता केंद्र में किसान गोष्ठी का आयोजन

किसानों ने सीखा कीट प्रबंधन

आज समाज नेटवर्क

जींद। निडाना के कीट साक्षरता केंद्र के किसानों द्वारा मंगलवार को किसान जोगेंद्र मलिक के खेत में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। किसान गोष्ठी में कीट साक्षरता केंद्र के मास्टर ट्रेनरों द्वारा किसानों को कपास की फसल में मौजूद कीटों की पहचान करवाई तथा बिना कीटनाशकों का प्रयोग किए कीट प्रबंधन के माध्यम से ही अच्छा उत्पादन लेने के टिप्स दिए।

किसानों ने कपास की फसल में मौजूद चूरड़ा, सफेद मक्खी, हरा तेला, टीडे (ग्रास होपर), सूरा पांच प्रकार के कीटों की पहचान की। इस अवसर पर किसानों ने सुरंगी नाम एक नए कीट की खोज की। कीट साक्षरता केंद्र के मास्टर ट्रेनर रणबीर मलिक व मनबीर रेढू ने बताया कि फिलहाल कपास की फसल में चूरड़ा, सफेद मक्खी, हरातेला, टिडे व सूरा नामक पांच प्रकार शाकाहारी कीट मौजूद हैं। जिसमें सफेद मक्खी, टिडे, सूरा व हरातेला तो नामात्र की संख्या में हैं, लेकिन चूरड़ा की तादाद थोड़ी ज्यादा है। लेकिन अभी तक चूरड़ा भी फसल को किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाने की स्थिति में नहीं है। उन्होंने बताया कि किसान गोष्ठी के दौरान किसानों ने सुरंगी नामक एक नए कीट की खोज की है। यह कीट पत्ते के अंदर रहकर अपना जीवन चक्र चलाता है। जब यह खा-पीकर अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है तब पत्ते में एक छोटा सा छेद करके पत्ते से बाहर आता है। इसके बाद इसका क्यूपा बनता है, जिससे बाद में पतंगा तैयार होता है। किसान गोष्ठी के दौरान किसानों के ग्रुप बनाकर उन्हें कपास की फसल में कीटों की पहचान करवाकर व्यवहारिक ज्ञान भी दिया गया।

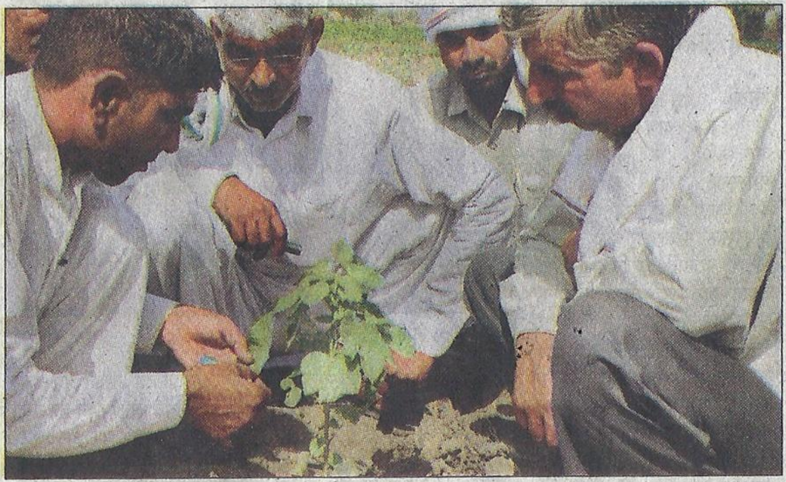

किसान पाठशाला में कपास की फसल में बैठकर कीटों की पहचान करते किसान।

कृषि विभाग के एडीओ डा. सुरेंद्र दलाल ने बताया कि कीट शाकाहारी व मासाहारी दो प्रकार के होते हैं। लेकिन कीट का शरीर सिर, धड़ व पेट तीन भागों में बटा होता है। मुहं के हिसाब से कीट दो प्रकार के होते हैं एक जिनके डंक होता है व दूसरे वे जनके जबड़ा होता है। डंक वाले कीट फसल से रस चूस कर तथा जबड़े वाले कीट फसल के पत्तों को कुतर-कुतर कर खाते हैं। डा. दलाल ने बताया कि आमतौर पर कीट की तीन जोड़ी पैर, दो जोड़ी पंख होते हैं। इस अवसर पर खरक रामजी निवासी रोशन ने बताया कि वह फसल में की जाने वाली सभी गतिविधियों को अपनी डायरी में नोट करता है। इस मौके पर किसान गोष्ठी में ललितखेड़ा, निडाना, चाबरी, निडानी, खरकरामजी, राजपूरा भैण, अलेवा के दो दर्जन से भी ज्यादा किसान मौजूद थे।

कृषि विभाग की तरफ से 29 हजार किए जाएंगे खर्च

कीट प्रबंधन का गुर सिखाएंगी महिलाएं

आज समाज नेटवर्क

जींद। निडाना गांव की महिला खेत पाठशाला की मास्टर ट्रेनर महिलाएं अब ललितखेड़ा गांव की महिलाओं को कीट प्रबंधन का गुर सिखाएंगी। उनके कार्य को देखकर अब कृषि विभाग इनके साथ मैदान में उतर आया है। इसमें कृषि विभाग की तरफ से 29 हजार रुपए खर्च किए जाएंगे। बुधवार को उपकृषि निदेशक डा. रामप्रताप सिहाग के नेतृत्व में ललितखेड़ा गांव में महिला खेत पाठशाला का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय गन्ना अनुसंधान केंद्र उचानी (करनाल) की निदेशक डा. सरोज जयपाल ने बतौर मुख्यातिथि के तौर पर शिरकत की। इस पाठशाला में निडाना, ईगराह, ललितखेड़ा व अन्य गांवों की महिलाओं को कीट प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाएगा। निडाना की महिलाएं इसमें प्रशिक्षक की भूमिका निभाएंगी।

इसका संचालन निडाना के कृषि विकास अधिकारी डॉ. सुरेंद्र दलाल, खंड कृषि अधिकारी डॉ. जयप्रकाश द्वारा किया जा रहा है। इसमें निडाना गांव की महिलाएं बतौर प्रशिक्षक के रूप में भाग लेंगी। डॉ. सरोज जयपाल ने फसलों पर किए जा रहे अंधाधुंध स्प्रे के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला व महिला किसानों को जागरूक किया। कृषि उप निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग ने महिला किसानों को आश्वासन दिया कि उनकी इच्छा के अनुसार महिला किसान जिस भी अनुसंधान केंद्र का भ्रमण करना चाहे, कृषि विभाग उसी राज्य या जिले में महिलाओं को अनावरण यात्रा पर भेजने का खर्च वहन करेगा।

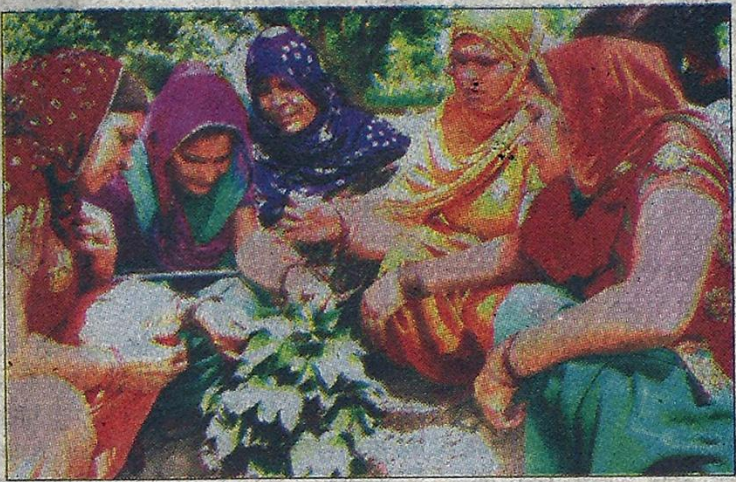

कपास की फसल में कीटों की पहचान करती महिलाएं।

महिला किसानों ने बताया कि वे पिछले साल के लगभग 100 किस्म के मांसाहारी व शाकाहारी कीटों की पहचान कर दूसरी महिलाओं को भी इनके जीवनचक्र के बारे में प्रशिक्षित कर चुकी हैं। इस अवसर पर गांव की महिलाओं ने डॉ. सरोज जयपाल को हरियाणवीं परंपरागत पोशाक दामण, कुर्ती व चुंदड़ी (तील) देकर सम्मानित किया। डॉ. सरोज ने महिलाओं से वायदा करते हुए कहा कि वे अपनी सेवानिवृत्ति के बाद इन महिलाओं से जुड़कर कीट प्रबंधन की अलख जाएंगी और जब भी वह यहां आएंगी, तब उनके द्वारा दी गई पोशाक में ही आएंगी। इस अवसर पर निडाना के किसानों ने उप कृषि निदेशक डा. आरपी सिहाग व डा.सरोज जयपाल का पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।